सामाजिक परिवर्तन के कारक
(Factors of Social Change)

समाजशास्त्रियों, एवं समाज मनोवैज्ञानिकों ने सामाजिक परिवर्तन के कुछ महत्वपूर्ण कारकों पर प्रकाश डाला है। जिनमें प्रमुख कारक निम्नांकित हैं—

→ **जैविक कारक (Biological factors)**— जैविक कारक में आनुवंशिकता से संबंधित कारक जैसे— जनसंख्या में वृद्धि, स्त्री-पुरुष अनुपात आदि को प्रमुख रूप से शामिल किया गया है। उदाहरण स्वरूप जनसंख्या में वृद्धि होने से सामाजिक-आर्थिक स्तर में गिरावट आती है और उससे महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन हो सकते हैं। इसी तरह यदि स्त्री-पुरुष अनुपात में एक निश्चित संतुलन नहीं रह पाता है, तो इससे भी महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न हो सकते हैं जैसे— यदि पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या काफी कम हो जाये तो यह उम्मीद की जा सकती है कि भारतीय समाज से दहेज प्रथा ~~एवं अन्तरजातीय विवाह~~ स्वयं ही समाप्त हो जाये तथा अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन मिलने लगे।

→ **भौतिक कारक (Physical factors)** — भौतिक कारकों में भौगोलिक या भौतिक वातावरण से संबंधित कारक आते हैं और इनसे सामाजिक परिवर्तन होता है जैसे— बाढ़, भूकम्प, अकाल, महामारी, युद्ध आदि ऐसे भौतिक कारक हैं जिनसे महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न हो जाते हैं क्योंकि इन विपदाओं के कारण स्वाभाविक तौर अस्त-व्यस्त हो जाते हैं जैसे- भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कई तरह के सामाजिक परिवर्तन को देखा जा सकता है।

→ **प्रौद्योगिकी कारक (Technological factors)**— इस श्रेणी में उन कारकों को रखा जाता है जो नये-नये मशीन एवं प्रौद्योगिकी विकास से संबंधित होते हैं आधुनिक प्रौद्योगिकी के उपयोग से व्यक्तियों के सामाजिक संबंधों में काफी बदलाव देखा जा सकता है। ऑगबर्न (1965), किसन (1985) तथा जॉनसन (1975) द्वारा किये गये अध्ययनों से स्पष्ट हुआ

Scanned with CamScanner

APPOINTMENTS

कि प्रौद्योगिकी कारकों में चार कारक महत्वपूर्ण हैं –

→ उद्योगों में मशीनों के उपयोग में वृद्धि — उद्योगों में आधुनिक मशीनों के उपयोग से उनकी कार्यक्षमता एवं उत्पादकता में वृद्धि हुई है, जिससे उनमें कार्यरत कर्मचारियों की आय में बढ़ोतरी हुई है और उनके सामाजिक संबंधों में काफी सुधार आया है।

→ संचार के साधनों का विकास — संचार के नये-नये साधनों जैसे— मोबाईल, इंटरनेट, टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्र आदि के विकास से सामाजिक संबंधों में अधिक निकटता आ गयी है तथा लोगों को एक-दूसरे को समझने में काफी मदद मिली है।

→ यातायात के साधनों में वृद्धि — यातायात के आधुनिक साधनों के आ जाने से लोगों के बीच की भौगोलिक दूरी काफी कम हो गयी है। जिससे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में काफी वृद्धि हुई साथ ही व्यक्ति एक दूसरे के सामाजिक मूल्यों एवं विश्वासों से अवगत हुए। जिससे समाज के पुराने मूल्यों एवं विश्वासों में सकारात्मक परिवर्तन आया है और क्रान्तिकारी सामाजिक परिवर्तन भी हुए हैं।

→ कृषि प्रविधियों में विकास — कृषि प्रविधियों में विकास से किसानों की उत्पादकता एवं आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ है। जिसका लोगों के सामाजिक संबंधों पर भी बहुत ही अनुकूल प्रभाव पड़ा है।

→ आर्थिक कारक (Economic Factors) — प्रसिद्ध समाजशास्त्री कार्ल मार्क्स का मत है कि सामाजिक परिवर्तन समाज के आर्थिक परिवर्तनों से सर्वाधिक प्रभावित होता है। जैसे-जैसे लोगों की आर्थिक उन्नति होती है, उनके चिंतन, मनोवृत्ति, रहन-सहन, सामाजिक प्रथा, सामाजिक मूल्यों आदि में काफी परिवर्तन हो जाते हैं। भारतीय समाज में भी जैसे-जैसे लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है, वे स्त्री शिक्षा संबंधी मूल्यों एवं मानकों में काफी परिवर्तन ला रहे हैं। ऐसा ही नहीं आज अधिक

NOTES

Scanned with CamScanner

भारतीयों के यहाँ आर्थिक संपन्नता के कारण आधुनिक आराम के उपकरण जैसे- टेलीविजन, फ्रिज, कूलर आदि मौजूद हैं। जिनसे इनके सामाजिक चिंतन एवं सामाजिक संबंधों में काफी बदलाव आ गए हैं जिनसे सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न हुए हैं।

→ सांस्कृतिक कारक (Cultural Factors)— संस्कृति में परिवर्तन का असर सामाजिक मूल्यों तथा सामाजिक संबंधों पर स्पष्ट पड़ता है। भारतीय संस्कृति में परिवर्तन का ही परिणाम है कि वर्तमान में लड़के एवं लड़कियों के पोशाक एवं फैशन आदि में इतनी आधुनिकता बढ़ गयी है कि लैंगिकता संबंधी व्यवहारों में पहले की अपेक्षा काफी उत्तेजनाशीलता आ गयी है। मानवशास्त्रियों के अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि सांस्कृतिक विभिन्नता एवं परिवर्तन से सामाजिक रीति-रिवाजों, मानकों, विश्वासों में काफी अन्तर हो जाते हैं। जिनसे सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया तेजी से होती है।

→ शैक्षिक कारक (Educational Factors)— शिक्षा का प्रभाव सामाजिक परिवर्तन पर काफी पड़ा है। भारतीय समाज में स्त्रियों के सामाजिक जीवन में उन्नति, बाल-विवाह का अन्त, विधवाओं के प्रति अधिक मानवीय व्यवहार, धार्मिक बंधन में ढीलापन तथा हरिजनों एवं पिछड़ी जातियों के प्रति उदारता आदि का कारण स्त्री-पुरुषों शिक्षा के स्तर में वृद्धि ही है। श्रीनिवासन (1989) के अनुसार भारत में शिक्षा में बढ़ती जागरूकता के कारण सामाजिक संबंधों में काफी परिवर्तन आ गया है।

→ मनोवैज्ञानिक कारक (Psychological Factors)— समाज मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि समाज के लोगों में व्याप्त कुछ प्रतियोगिता, सहकारिता, उत्सुकता, नवीनता आदि की प्रवृत्तियों से सामाजिक परिवर्तन तेजी से होता है। इन मनोवैज्ञानिक कारकों के कारण सामाजिक संबंधों एवं उनकी संरचनाएँ काफी

Scanned with CamScanner

परिवर्तित हो रही हैं। नवीनता एवं उत्सुकता की तीव्र प्रवृत्ति के कारण आधुनिक समाज के सामाजिक मूल्यों में काफी परिवर्तन आ रहे हैं। ~~आयु~~ प्रायः यही कारण है कि आधुनिक रहन-सहन वाले एक परिवार के प्रति समाज के व्यक्तियों की मनोवृत्ति पारंपरिक रहन-सहन वाले एक परिवार के प्रति मनोवृत्ति से भिन्न होती है।

→ राजनैतिक कारक (Political Factors) — सामाजिक परिवर्तन में राजनैतिक कारकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। किसी देश की राजनैतिक व्यवस्था, राजनैतिक नेतृत्व एवं राजनैतिक योजनाओं का सीधा प्रभाव सामाजिक परिवर्तन पर पड़ता है। भारतीय समाज में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब राजनैतिक नीतियों एवं नेतृत्व में परिवर्तन आया तो तरह-तरह के सामाजिक परिवर्तन भी हुए। अनेक राजनैतिक पार्टियों ने दलितों एवं हरिजनों के उत्थान संबंधी अपने मुद्दों को बुलन्द किये और उन्हें क्रियान्वयन भी किये। परिणामस्वरूप ऐसे वर्गों की सामाजिक आर्थिक स्तर में काफी बदलाव आयी और आज वे अपने को समाज का एक महत्वपूर्ण वर्ग मानने में तनिक भी हिचकिचाते नहीं हैं। गिलिन एवं गिलिन (1948) के अनुसार सामाजिक परिवर्तन पर जितना राजनैतिक कारकों का प्रभाव स्पष्ट रूप से पड़ता है, उतना किसी अन्य कारक का नहीं पड़ता है, क्योंकि राजनैतिक हालातों तथा सामाजिक हालातों में सीधा संबंध होता है। इस प्रकार कहा जा सकता है, कि सामाजिक परिवर्तन को उत्पन्न करने में कई कारक अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिससे समाज में सामाजिक परिवर्तन संभव हो पाता है।